



सतत विकास और सामाजिक प्रभाव हेतु उच्च शिक्षा

सरोज शुक्ला

कृपालु महिला महाविद्यालय कुंडा प्रतापगढ़ (उ.प्र.)

Corresponding Email: sarojshukla8887@gmail.com

Communicated : 22.06.2026

Revision : 25.07.2026

Accepted : 15.08.2026

Published: 30.09.2026

सारांश :

उच्च शिक्षा किसी भी राष्ट्र के प्रगति का आधार स्तंभ होती है। वैश्विक परिप्रेक्ष्य में केवल ज्ञान प्राप्त करना काफी नहीं है, बल्कि ऐसी शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है जो राष्ट्र में सतत विकास का आधार बने क्योंकि शिक्षा के बिना सतत विकास की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। शिक्षा ही समझ में सकारात्मक परिवर्तन लाने में समर्थ है। सतत विकास का अर्थ ऐसे विकास से है जो वर्तमान पीढ़ी की जरूरत को पूरा करे परंतु भविष्य की पीढ़ियों के संसाधनों एवं उनके अधिकारों को प्रभावित न करे।

एलेन-ने अपनी पुस्तक “हाउ टू सेव द न्यू वर्ड” में लिखा है “सतत विकास वह विचार और प्रयत्न है जिसके द्वारा विभिन्न जीवों एवं पारिस्थितिकीय व्यवस्थाओं का ऐसे ढंग से उपयोग किया जाता है, जिससे व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए उनका अस्तित्व अनिश्चितकाल तक बना रहे”। सतत विकास का प्रारंभ तो वैदिक काल से ही हो चुका था वैदिक काल में ऋषि-मुनियों की चिंतन धारा में ही संपूर्ण विश्व का विकास निहित था उस समय के तत्व ज्ञाताओं ने

‘सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भागं भवेत्’ ।।

कहकर सर्वदा सभी के कल्याण की भावना व्यक्त कर दी थी। वह समय यज्ञ कर्म –काण्ड आदि का समय था। यज्ञ आदि के माध्यम से चतुर्धा वातावरण शुद्ध रहा करता था परंतु मध्यकाल आते-आते लोगों की यज्ञीय भावनाएं न्यून होने लगीं और विज्ञान एवं तकनीक को बढ़ावा मिलने लगा फलस्वरूप पर्यावरणीय दोहन में तीव्रता आई जिसके कारण जलवायु परिवर्तन, ग्रीनहाउस गैसों में वृद्धि, अनवीकरणीय ऊर्जा में गिरावट आदि होने लगी।

जिससे आधुनिक समय के भविष्यवेत्ताओं की चिंता बढ़ने लगी कि पर्यावरणीय सुरक्षा कैसे की जाए इसी भविष्य को सुरक्षित करने के लिए १९७२ ई. में स्टॉकहोम में वैश्विक पर्यावरण नीति की नींव रखी गई।

वर्तमान समय में विकास का अर्थ केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित न रहकर सामाजिक, वैज्ञानिक, पर्यावरणीय आदि में संतुलन स्थापित करना है।

प्रमुख शब्द : उच्च शिक्षा, सामाजिक प्रभाव, वैज्ञानिक दृष्टिकोण आदि।

प्रस्तावना :

सतत विकास के अंतर्गत विश्व संरक्षण की नीति बनाई गई सतत विकास मानव विकास के प्रति विश्व के विभिन्न देशों में एक समन्वित दृष्टिकोण विकसित करने के उद्देश्य निर्धारित कर १९७२ ई० में शुरुआत हो चुकी थी परंतु इसे बढ़ावा १९९२ ई. में ब्राजील में आयोजित पर्यावरण विकास पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन से मिला जिसे पृथ्वी सम्मेलन के नाम से भी जाना जाता है।

संपूर्ण विश्व के विभिन्न देशों ने सामूहिक रूप से २०१५ में संयुक्त राष्ट्र की महासभा द्वारा कुछ विशेष लक्ष्य निर्धारित किए जिन्हें सहस्राब्दी विकास लक्ष्य का नाम दिया गया जिसमें गरीबी, उन्मूलन, भुखमरी की समाप्ति, स्वास्थ्य और शिक्षा में सुधार, असमानता में कमी आर्थिक विकास को बढ़ावा देने वाली रणनीतियों के साथ-साथ जलवायु परिवर्तन से निपटना, महासागरों और जंगलों के संरक्षण के लिए काम करना जैसे १७ लक्ष्य मुख्य थे अन्य लक्ष्य गौण थे इसका मुख्य उद्देश्य है “कोई पीछे

न छोटे” जिन्हें २०३० तक प्राप्त करने की अवधि निर्धारित की गई है।

बान की मून-ने ‘इसे विश्व में सबसे अधिक सफल विश्व व्यापी निर्धनता रोधी पहल कहा है।’

आज विश्व भर में परिवर्तन देखने को मिल रहा है जिससे व्यापक रूप से यह अनुभव किया जा रहा है कि आने वाली पीढ़ियों को पर्यावरणीय गिरावट की गंभीर स्थिति का सामना करना पड़ सकता है, उन्हें इस समस्या से बचाने के लिए सतत विकास का लक्ष्य निर्धारित किया गया जिसमें जलवायु परिवर्तन ओजोन परत का रित्तिकरण प्रजाति हानि को रोका जाए। संक्षेप में यों कहा गया है कि “सतत विकास परिवर्तन की एक प्रक्रिया है जिसमें संसाधनों का उपयोग, निवेश की दिशा, तकनीकी विकास का उन्मुखीकरण और संस्थागत परिवर्तन सभी सामाजिक में हैं और मानव की जरूरत और आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए वर्तमान और भविष्य दोनों की क्षमता को बढ़ाते हैं।

शिक्षा के द्वारा सतत विकास को बढ़ावा :

शिक्षा के माध्यम से सतत विकास को बढ़ावा देना छात्रों को ज्ञान कौशल और गुणों के साथ सुसज्जित करने की प्रक्रिया है शिक्षित वर्ग ही सतत विकास में योगदान देकर जैसे-जलवायु परिवर्तन और आपदा जोखिम में न्यूनता लाना, जैव विविधता का संरक्षण, गरीबी में कमी लाना, भविष्य के परिदृश्यों की कल्पना करना, सहयोगपूर्ण ढंग से निर्णय-निर्माण जैसी क्षमताओं को विकसित करना आदि कार्य कर सकते हैं।

इस प्रकार उच्च शिक्षा दूरगामी परिवर्तनों के लिए अति आवश्यक है, उच्च शिक्षा आज प्रायः कुशल और संरक्षित भविष्य के लिए अर्थपूर्ण है। सतत विकास का संबंध उच्च शिक्षा को वैश्विक स्तर पर जोड़ा जाना चाहिए क्योंकि शिक्षा सतत विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सतत विकास के लिए मौलिक शिक्षा को बढ़ावा देना मौजूद शिक्षक एवं पाठ्यक्रमों में शिक्षा के सभी स्तर (प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा) में सतत विकास से संबंधित लक्ष्य को शामिल कर जन जागरूकता को विकसित करना चाहिए।

सतत विकास से संबंधित नित्य नए प्रशिक्षक की व्यवस्था करना, सीखना एवं सीखाना चाहिए। क्योंकि शिक्षा सर्व समाज को प्रोत्साहित करने की कड़ी है शिक्षा के माध्यम से पर्यावरणीय ज्ञान प्राप्त कर मनुष्य उसके संरक्षण के दायित्व को पूरा करने का प्रयत्न करता है शिक्षा आर्थिक कल्याण को प्रोत्साहित करती है सतत विकास का उद्देश्य लोगों को पृथ्वी ग्रह से समझौता किए बिना निर्णय निर्माण कार्यों को सक्षम बनाना है।

सतत विकास प्राप्त करने में उच्च शिक्षा की भूमिका :

अति महत्व पूर्ण है। जैसा कि पूर्व में ही स्पष्ट किया जा चुका है कि यह औपचारिक रूप से १९९२ ईस्वी में विश्व समुदाय के लिए आरंभ किया गया था। इसमें उच्च शिक्षा का विशेष स्थान है यह पर्यावरणीय विषयों से संबद्ध है। कोविड-१९ महामारी से विश्व में जो त्रासदी उत्पन्न हुई उससे विश्व बेहतर निर्माण के अवसर से लंबे समय तक वंचित रह गया।^४ जिसकी क्षतिपूर्ति में सतत विकास महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहा है। सतत विकास में शैक्षणिक संस्थान चाहे वे स्कूल, महाविद्यालय या विश्वविद्यालय हों उनको यह सुनिश्चित करने के लिए अपने प्रयास अनवरत करते रहना चाहिए कि सतत विकास के प्रत्येक पहलू को दृढ़ता प्रदान कर रहे हैं। विश्व के नीति - निर्माता और नेताओं को विकास से संबंधित समस्याओं का अति शीघ्र समाधान करना परम कर्तव्य है। इस प्रकार सतत विकास के लिए उच्च शिक्षा नए-नए आविष्कार को बढ़ावा देती है और मानव निर्मित निर्णय से उत्पन्न

होने वाली सतत विकास संबंधी समस्याओं को हल करने के लिए आवश्यक जानकारी प्रदान करती है। मानव संसाधनों में निवेश के रूप में उच्च शिक्षा कारकों के बीच महत्वपूर्ण योगदान दे रही है जो सतत विकास में योगदान करती है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरंत बाद सन १९४७ ईस्वी में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह के अवसर पर भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि "विश्वविद्यालय का दायित्व मानवता, सहनशीलता, तर्क विचारों के विकास तथा सत्य की खोज करना है।"

एच० हेदरिंगटन महोदय-ने अपनी पुस्तक 'दि' सोशल फंक्शन ऑफ द यूनिवर्सिटी में कहा है कि उच्च शिक्षा का मुख्य उद्देश्य ज्ञान का संग्रह करना, नवीन ज्ञान की खोज करना तथा ज्ञान का व्यापक प्रसार करना है, जो मानव संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों में विकास तथा उन्नति में सहयोगी साबित हो सके"।

वर्तमान परिदृश्य में उच्च शिक्षा के माध्यम से चारों तरफ प्रतिभाएं विस्तारित हैं इसके माध्यम से प्रजातंत्र की सफलता हेतु कुशल नागरिकों का निर्माण हो रहा है। विभिन्न क्षेत्रों जैसे व्यवसाय, वाणिज्य, कृषि, उद्योग, राजनीति प्रशासन आदि के लिए छात्र - छात्राओं को प्रशिक्षित किया जा रहा है। जिससे छात्र-छात्राओं का सर्वाधिक विकास हो सके, उनके नैतिकता व सदाचार जैसे आदर्श गुण विकसित हो सकें। वे संस्कृति एवं प्रकृति के महत्व को भली-भांति समझकर उनको संरक्षित कर सकें समाज को गतिशील बनाए रखने में शिक्षा की भूमिका अति महत्वपूर्ण है सामाजिक क्रियाकलापों को परिवर्तित करने में अहम भूमिका शिक्षा की है।

जब तक लोग अपने अधिकारों और कर्तव्यों को जानने के इच्छुक नहीं होते तब तक उन्हें उनकी जानकारी प्राप्त नहीं हो पाती। वे पुरानी विचारधाराओं और रूढ़ि परंपराओं तक ही सीमित रह जाते हैं। यदि समाज में परिवर्तन लाना है तो प्रत्येक व्यक्ति को अपनी भूमिका का निर्वहन पूरी निष्ठा और ईमानदारी से करना पड़ेगा। जैसे-अस्पताल में डॉक्टर, शिक्षा क्षेत्र में अध्यापक आदि। आज की पीढ़ियों का एवं आने वाली पीढ़ियों का विकास हो इसके लिए शिक्षित होना अति आवश्यक है क्योंकि शिक्षा व्यक्तियों के व्यक्तित्व और संरचनात्मकता को विकसित करने की एक प्रक्रिया है। जो व्यक्तिगत क्षमताओं, सामाजिक वातावरण, आर्थिक विकास, नैतिक मूल्यों को शिक्षा के माध्यम से ही विकसित किया जा सकता है। एक बार अरस्तु से पूछा गया कि शिक्षित और अशिक्षित व्यक्ति में क्या अंतर है

उनका उत्तर था-”जैसे जीवित और मृतकों के बीच अंतर होता है” ।

शिक्षा व्यक्तियों के जीवन की गुणवत्ता को आकार देने और उनके माध्यम से बेहतर समाज और विश्व का निर्माण करने की एक प्रक्रिया है। आज का समय विज्ञान और प्रौद्योगिकी का है।

इस २१वीं सदी में यह अनुभव किया गया है कि लोगों को केवल मानव और सामाजिक प्राणी बनने के लिए शिक्षित नहीं होना है बल्कि उन्हें रचनात्मक और उत्पादक प्राणी बनने के लिए शिक्षा की आवश्यकता है। हम सब संविधान में वर्णित अधिकारों की बात करते हैं लेकिन क्या किसी ने संविधान का अध्ययन किया है, क्या उन अधिकारों की जानकारी निम्न या मध्य वर्गीय लोगों को है इन सब समस्याओं को समाप्त करने के लिए शिक्षा की आवश्यकता है।

सतत विकास और विज्ञान :

सतत विकास में विज्ञान का अति महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अभाव में सतत विकास की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। जीवन शैली और अर्थव्यवस्था में पर्यावरण अनुकूलता प्राप्त करने के कई संभावित सुझाव तकनीकी और नवाचार पर्यावरण संरक्षण के लिए उत्कृष्ट संभावनाओं का प्रदाता विज्ञान है, जो ज्ञान आधारित नए समाज का निर्माण करता है जो सतत विकास का मुख्य आधार है जैसे-ऊर्जा उपयोग का ज्ञान, नयी ऊर्जा का आविष्कार, वायुमंडलीय ग्रीनहाउस गैसों में कमी कैसे करें स्वच्छ प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देना एक राजनीतिक लक्ष्य के रूप में सततता और पारिस्थितिकी मानदंडों के अनुसार प्रकृति, समाज और अर्थव्यवस्था के बीच अंतर संबंधों का अनुकूलन आवश्यक है। जिसमें उच्च शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है।

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः यह कहना अति समीचीन होगा कि सतत विकास की परिधि में उच्च शिक्षा आधार स्तंभ है। यह न केवल युवा पीढ़ी को ज्ञान और कौशल प्रदान करती है बल्कि उन्हें सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय उत्तरदायित्व के प्रति जागरूक बनाती है। उच्च शिक्षा संस्थानों के शोध, नवाचार और नेतृत्व समाज को अधिक समावेशी टिकाऊ और न्याय संगत बनाने में सफल सिद्ध हो रहा है यदि हमें एक अनुकूल और समृद्धि भविष्य की ओर अग्रसर होना है तो उच्च शिक्षा को सतत विकास के लक्ष्य से जोड़ना अति आवश्यक है

तभी आने वाली पीढ़ियों के लिए समृद्ध सुरक्षित और स्थाई भविष्य का निर्माण हो सकता है।

जीवन शैली और अर्थव्यवस्थाओं में पर्यावरणीय अनुकूलता प्राप्त करने के कई संभावित सुझाव तकनीकी और नवाचार पर्यावरणीय संरक्षण के लिए उत्कृष्ट संभावनाओं का प्रदाता विज्ञान है जो ज्ञान आधारित समाज का निर्माण करता है। जो सतत विकास का मुख्य आधार है जैसे-ऊर्जा उपयोग, नई ऊर्जा का आविष्कार वायुमंडलीय ग्रीन हाउस, गैसों में कमी कैसे करें, स्वच्छ प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देना एक रणनीति लक्ष्य के रूप में सततता और पारिस्थितिकी मानदंडों के अनुसार प्रकृति, समाज और अर्थव्यवस्था के बीच अंतरसंबंधों का अनुकूलन आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

अग्रवाल जी० के०, २०२०, भारत में सामाजिक समस्याएं एवं विकास के मुद्दे, पृष्ठ संख्या- ३०२- अग्रवाल जी० के०, २०२०, भारत में सामाजिक समस्याएं एवं विकास के मुद्दे, पृष्ठ संख्या- ३३५

वृहदारण्यक

बंसल एस .के., २०२०, शिक्षा के दार्शनिक- समाजशास्त्रीय -राजनीतिक -आर्थिक परिप्रेक्ष्य, पृष्ठ संख्या -२५१

अग्रवाल जी. के., २०२०, भारत में सामाजिक समस्याएं एवं विकास के मुद्दे, पृष्ठ संख्या- ३०२- अग्रवाल जी. के., २०२०, भारत में सामाजिक समस्याएं एवं विकास के मुद्दे, पृष्ठ संख्या- ३३६

डॉक्टर विनय प्रताप सिंह, डॉक्टर सुषमा वानखेडे, सतत विकास में उच्च शिक्षा की भूमिका, पृष्ठ सं० ३

मालवीय डॉ राजीव, २०२०, शिक्षा की वैचारिक रूपरेखा, पृष्ठ संख्या -३०८

डॉक्टर विनय प्रताप सिंह, डॉक्टर सुषमा वानखेडे, सतत विकास में उच्च शिक्षा की भूमिका, पृष्ठ सं० ४

मालवीय डॉ राजीव, २०२०, शिक्षा की वैचारिक रूपरेखा, पृष्ठ संख्या -३०९

मालवीय डॉ राजीव, २०२०, शिक्षा की वैचारिक रूपरेखा, पृष्ठ संख्या -३०९